Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLV

जशपुर जिले की वर्तमान स्थिति एवं भावी सम्भावनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. एस.के. शर्मा* गुलशन केरकेट्ट**

* प्राचार्य, पी एन एस महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.) भारत
** शोधार्थी (वाणिज्य) अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.) भारत

प्रस्तावना – छत्तीसगढ के उत्तर में स्थित जिला जशपुर में सोगडा आश्रम के द्वारा सन 2010 में असम से चाय पौधा लाकर ट्रायल किया गया था। अनुपयोगी जमीन पर बनाया गया है चाय बगान –सारूडीह का चाय बगान पर्वत और जंगल से लगा हुआ है।

अनुपयागी जमीन पर में बगान बन जाने से आसपास न सिर्फ हरियाली है,पर्यटन एवं पर्यावरण संरक्षण के लिहाज से भी सारूडीह और जशपुर की पहचान बढ़ रही है। चाय बगान के से पानी और मृदा संरक्षण हुआ । जशपुर ज़िला भारत के छत्तीसगढ़ राज्य का एक ज़िला है। ज़िले का मुख्यालय जशपुर है। आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत खाद्य प्रसंस्करण सूक्ष्म इकाइयों को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार द्वारा प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना का आरंभ किया गया है। इस योजना के अंतर्गत असंगठित क्षेत्र के इकाईयों को एकत्र कर उन्हें आर्थिक और विपणन की दृष्टि से मजबूत किया जाएगा।

चाय को किया गया चयनित–एक जिला एक उत्पाद के अंतर्गत जिले को खाद्य सामग्री में चाय के लिए चयनित किया गया है। जिसकी यूनिट लगाने पर मार्केटिग, पैकेजिग, फाइनेंशियल मदद, ब्रांडिग की मदद इस योजना के अंतर्गत किसानों को मिलेगी। छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले में प्रयोग के तौर पर आरंभ की गई चाय की खेती अब क्षेत्र की पहचान बनेगी। जशपुर के सारुडीह चाय बागान के अनुरूप सरगुजा के मैनपाट में भी चाय के बागान विकसित होंगे। जशपुर और सरगुजा जिले के पाठ क्षेत्र चाय की खेती के लिए अनुकूल पाए गए हैं। कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा जशपुर और सरगुजा जिले के बाद बलरामपुर जिले के सामरी पाठ क्षेत्र में भी चाय की खेती की संभावनाएं तलाशी जा रही हैं। यह प्रयोग पूरी तरह से सफल होने पर उत्तारी छत्तीसगढ़ के बहुत संख्या किसानों को आर्थिक समृद्धि का सशक्त माधयम मिल सकेगा,इसके लिए राज्य सरकार की ओर से भी विशेष पहल की जा रही है।

जशपुर जिले के पठारी क्षेत्र की जलवायु चाय की खेती के लिए अनुकूल है। मध्य भारत में जशपुर जिला ही ऐसा है जहां पर चाय की सफल खेती की जा रही है। शासन के जिला खनिज न्यास मद योजना, वन विभाग के सयुक्त वन प्रबंधन सुदृढ़ीकरण, डेयरी विकासयोजना एवं मनरेगा योजना से चाय खेती को प्रोत्साहित किया जा रहा है। शासन के सहयोग से लगभग 50 कृषकों के 80 एकड़ कृषि भूमि पर चाय की खेती का कार्य प्रगति पर है। मैनपाट के 30 प्रगतिशील किसानों को साथ लेकर कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक जशपुर जिले के सारुडीह स्थित चाय बागान पहुंचे यहां वन विभाग के अधिकारियों व चाय की खेती में लगी,स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने चाय की खेती से बदली आर्थिक स्थिति को लेकर अपने विचार व्यक्त किए हैं। चाय की खेती आरंभ करने के दौरान सामने आई कठिनाइयों के बाद इसके बेहतर उत्पादन की तकनीक से मैनपाट के प्रगतिशील किसानों को अवगत कराया। चाय की खेती के लिए मौसम की परिस्थिति, उन्नत बीज, उसके रोग उपचार के अलावा चाय की खेती के लिए भूमि का चयन, सिंचाई प्रबंधन, पत्तियों की कटाई, चायपत्ती बनाने के साथ पैकेजिंग और मार्केटिंग तक की गतिविधियों से अवगत होकर मैनपाट के प्रगतिशील किसानों का दल वापस लौट आया है। कृषि वैज्ञानिकों का मानना है कि जशपुर के जिस क्षेत्र में चाय की खेती की जा रही है वैसा ही मौसम मैनपाट के पाठ क्षेत्रों का भी है, इसलिए मैनपाट में भी चाय की खेती निश्चित रूप से सफल होगी। पांच साल पहले प्रयोग के तौर पर जशपुर में चाय की खेती शुरू की गई थी। अब दायरा बढ़ता जा रहा है। पूरे नार्थ छत्तीसगढ़ के पहाड़ी इलाकों में चाय के बागान विकसित होने से इसकी अलग पहचान स्थापित होगी। सरगुजा के मैनपाट में नए बागान बड़े भूभाग पर स्थापित किए जाने की योजना तैयार की गई है। यहां के एग्रीकल्चर रिसर्च सेंटर ने भी पूरे उत्तार छत्तीसगढ़ की जलवायु को चाय की खेती के अनुकूल पाया है।

जशपुर जिले के ग्राम सारूडीह का चाय बागान पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बन गया है। इस बागान को देखने के लिए पर्यटक पहुंच रहे हैं। मात्र दस रुपए की फीस में चाय के बागान का अद्भुत नजारा उन्हें दार्जिलिंग, ऊंटी और असम में होने का अहसास कराता है। सारूडीह का चाय बागान पर्वत और जंगल से लगा हुआ है। अनुपयोगी जमीन में बागान बन जाने से आस पास न सिर्फ हरियाली है, पर्यटन एवं पर्यावरण संरक्षण के लिहाज से भी सारूडीह और जशपुर की पहचान बढ़ रही है। चाय के बागान से पानी और मृदा का संरक्षण हुआ। बागान में चाय के पौधों को धूप से बचाने लगाए गए शेड ट्री को समय–समय पर काटा जाता है, जिससे जलाऊ लकड़ी भी गांव वालों को आसानी से उपलब्ध हो जाती है। यहां बागान के पौधों के बीच में मसाला की खेती को भी आजमाया जा रहा है। सफलता मिली तो आने वाले दिनों में मसाला उत्पादन में भी जशपुर जिले का नाम होगा।

चाय प्रसंस्करण यूनिट में मशीन संचालन के लिए दार्जिलिंग क्षेत्र के

बीरबहादुर सुब्बा को जिम्मेदारी सौंपी गई है। सुब्बा 40 साल तक चाय उत्पादन के क्षेत्र में काम कर चुके है और कंपनी से रिटायर्ड है। अनुभवी होने से सुब्बा के सहयोग से यूनिट संचालन में आसानी हो रही है। वे युवाओं को मशीन संचालन का प्रशिक्षण दे रहे हैं। चाय प्रसंस्करण यूनिट में चाय उत्पादन शुरू हो गया है। हालांकि अभी एक लिमिट में चायपत्ती का उत्पादन हो रहा है, पर आने वाले समय में यहां से उत्पादित चाय को पैकेट में भरने और उसके विपणन के लिए और लोगों को काम देना पड़ेगा। पर्वतीय प्रदेशों के शिमला, दार्जिलिंग, ऊंटी, असम, मेघालय सहित अन्य राज्यों की चाय बागानों की तरह जशपुर के सारूडीह का चाय बागान पर्वत व जंगल से लगा हुआ है। यह 20 एकड़ क्षेत्र में फैला है। चाय प्रसंस्करण केंद्र लगने से पहले यहां समूह की महिलाओं द्वारा गर्म भट्ठे के माध्यम से चाय तैयार किया जाता था। बगान में चाय के पौधों को धूप से बचाने लगाए गए शेड ट्री को समय-समय पर काटा जाता है,जिससे जलाऊ लकड़ी गाँव वालों को आसानी से उपलब्ध हो जाती है।यहाँ पौधों के बीच में मसाला खेती को भी अजमाया जा रहा है।सफलता मिली तो आने वाले दिनों में मसाला उत्पादन में भी जशपुर जिले का नाम होगा।

चाय प्रसंस्करण यूनिट में मशीन संचालन के लिए दार्जिलिंग क्षेत्र के बीरबहादुर सुब्बा को जिम्मेदारी सौंपी गई है। संयुक्त वन प्रबंधन समिति सारूडीह में स्व-सहायता के अनुसूचित जनजाति के 18 परिवारों के सदस्यों से मिला जा सकता है,जिन्होंने जिला प्रशासन के मार्गदर्शन और अपनी मेहनत से 20 एकड छेत्र को चाय बगान में बदल दिया है। यहाँ 20 एकड कृषि भूमि पर चाय के पौधे लगे हैं। इसके प्रबंधन एवं प्रसंस्करणों में 2 महिला स्व-सहायता समूह जुडे हैं। अब तो चाय की खेती से व्यापारिक स्तर पर ग्रीन टी एवं सीटीसी (CTC) का निर्माण किया जा रहा है।

यहाँ निर्मित चाय की गुणवत्ता की जाँच भी व्यावसायिक संस्थाओं से कराई है, जिसमें दोनों प्रकार की चाय की गुणवत्ता उत्तम पाई गई है, बगान में जैविक खेती को ही आधार बनाया गया है। इसके लिए हितग्राही परिवारों को उन्नत नस्ल का पशुधन भी उपलब्ध कराया गया है। जिससे उनको अतिरिक्त लाभ हो रहा है । मनोरा ब्लॉक में कांटाबेल, जशपुर ब्लॉक के बालाछापर,सिटोंगा,बगीचा ब्लॉक के छिछली,सरगुजा जिले के मैनपाट में प्रारंभ हो चुकी है। स्व-सहायता समूह और किसानों के समूह द्वारा इन बगानों से प्राप्त होने वाली चाय पत्ती को प्रोसेस कर सी मार्ट, वन विभाग के आऊटलेट के साथ खुले बाजार में बेचकर आर्थिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

जिला प्रशासन के सहयोग से बालाछापर में प्रोसेसिंग यूनिट स्थापित किया गया है। चाय की खेती के लिए उन्हें तकनीकी सलाह समय समय पर कृषि वैज्ञानिकों द्वारा दी जाती है। सारूडीह का चाय बगान पर्वत और जंगलों से सटा हुआ है, यहाँ अनुपयोगी जमीन में चाय बगान बन जाने से आसपास न सिर्फ हरियाली है बल्कि पर्यटन और पर्यावरण संरक्षण के लिहाज से भी सारूडीह और जशपुर की पहचान काफी ज्यादा बढ रही है। चाय के बगान से पानी और मिट्टी का संरक्षण भी काफी तेजी से हुआ है। चाय उत्पादन के क्षेत्र में अपनी धाक जमा चुके ने जशपुर ने अब अपनी धरती में उगे चाय की पत्तियों से निर्मित ग्रीन टी का दूसरा ब्राण्ड अब बाजार आ गया है। 'सारूडीह' नाम से लांच किया गया, यह चाय वन विभाग द्वारा संचालित जिले के ग्राम पंचायत सारूडीह के ढ़ारूकोना गांव में स्थित सरकारी चाय बगान की देन है। इससे पहले ब्रह्मनिष्ठालय सोगडा में उत्पादित चाय को सोगड़ा नाम से बाजार में प्रस्तुत किया जा चुका है। जशपुर की चाय की विशेषता इसके पूरी तरह से रसायन मुक्त होना हैं। चाय पत्ती के उत्पादन में पूरी तरह से जैविक खाद का उपयोग किया जा रहा है, वहीं चाय की पत्तियों की पैकिंग की प्रक्रिया को भी पूरी से रसायन से मुक्त रखा है। नतीजा जशपुर में उत्पादित चाय की मांग दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। जशपुर की चाय की महक अब जिला और प्रदेश की सीमा से बाहर निकल कर देश में फैल रही है। चाय विशेषज्ञ यहाँ उत्पादित हो रही चाय पत्ती को दार्जिलिंग से बेहतर बता रहे हैं। चाय बगान के सफल प्रयोग के बाद अब प्रदेश सरकार ने जशपुर में सरकारी चाय प्रोसेसिंग यूनिट लगाने की पहल की है। यह प्रदेश का पहला सरकारी चाय प्रोसेसिंग यूनिट होगा। बगान को संचालित कर रही महिला स्व-सहायता समूह से जुड़ी महिलाएँ करेंगी। सरकार का यह कदम महिला सशक्तीकरण की दिशा में भी एक नया कदम माना रहा है। वर्ष में प्रत्येक परिवार को अच्छी आमदानी प्राप्त हो रही है।

दरअसल पर्वतीय और ठंडे प्रदेशों में ही चाय की खेती होती है। छत्तीसगढ़ के सरगुजा अंचल का जशपुर में भी जलवायु की स्थिति ठंडे प्रदेशों की तरह है। यह जिला ऐसे ही भौगोलिक संरचना पर स्थित है, यहाँ के पठारी इलाके और लेटेराइट मिट्टी की होने की वजह से जशपुर में चाय के बगानों को विकसित करने के लिए अनुकूल वातावरण है। चाय उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए प्रसंस्करण केन्द्र की स्थापना की गयी है। छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले की पहचान यहाँ की विशिष्ट आदिवासी संस्कृति, प्राकृतिक पठारों एवं नदियों की सुन्दरता तथा एतिहासिक रियासत से तो है ही, लेकिन पिछले कुछ वर्षो से जशपुर की पहचान में एक नया नाम जुड़ गया है और ये पहचान देशव्यापी हो गई है, अभी तक चाय की खेती के लिए लोग असम या दार्जिलिंग का ही नाम लेते रहे हैं, लेकिन जशपुर में भी चाय की खेती होने लगी है जो पर्यटकों को भी अपनी तरफ आकर्षित कर रही है। हम जानते हैं कि पर्वतीय एवं ठण्डे इलाकों में ही चाय की खेती हो पाती है और छत्तीसगढ़ का जशपुर जिला भी ऐसे ही भौगोलिक संरचना पर स्थित है।

पठारी क्षेत्र होने एवं लेटेराइट मिट्टी का प्रभाव होने की वजह से जशपुर में चाय की खेती के लिए अनुकूल वातारण है इसे देखते हुए जशपुर में चाय की खेती के लिए यहाँ चाय बगान की स्थापना की गई है । खास बात यह है कि देश के अन्य हिस्सों में चाय की खेती के लिए कीटनाशक और रासायनिक खाद का इस्तेमाल होता है, किन्तु जशपुर के चाय बगानों में वर्मी कम्पोस्ट खाद का इस्तेमाल किया जाता है जो चाय के स्वाद को बढ़ाता है साथ ही सेहत का भी ख्याल रखता है।

चाय प्रसंस्करण की स्थापना –छत्तीसगढ़ सरकार ने जशपुर जिले के बालाछापर में 45 लाख रूपये की लागत से चाय प्रसंस्करण केन्द्र स्थापित किया है, यहाँ पर उत्पादन कार्य भी प्रारंभ कर दिया है और इस प्रसंस्करण केन्द्र से सामान्य चाय एवं ग्रीन टी तैयार किया जा रहा है। बालाछापर में वन विभाग के पर्यावरण रोपणी परिसर में चाय प्रसंस्करण यूनिट की स्थापना की गई है। इस यूनिट में चाय के हरे पत्ते के प्रोसेसिंग की छमता 300 किलो ग्राम प्रतिदिन की है।

ठण्डे प्रदेश में होने वाली फसल भी जशपुर में – जशपुर जिले के झिंकी नाम के एक गाँव में किसान लीची की खेती करके मुनाफा कमा रहे हैं। खास बात यह है कि इस गाँव के हर घर की बाड़ी में लीची के पौधे है। छत्तीसगढ़ सरकार ने ग्रामीणों को बाड़ी में रोजगारमूलक गतिविधियों को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया जिसका लाभ उठाकर झिंकी के किसान लाखों रूपये की आमदानी कर रहे हैं। इसके अलावा जशपुर में पपीता काजू समेत कई

अन्य उपज का लाभ भी किसान ले रहे हैं। सेब की खेती दे रही बंपर मुनाफा– जशपुर में किसान सेब की खेती भी कर रहे हैं। जशपुर के पहाड़ी इलाके में सेब की खेती का प्रयोग सफल साबित हुआ है। पहली बार यहाँ के करदाना गाँव में सेब के पौधे रोपे गए थे, अब जशपुर के पिछड़े आदिवासी इलाके में भी ग्रमीण सेब की खेती करके बंपर मुनाफा कमा रहे हैं। इस प्रकार छत्तीसगढ़ का सेब भी जम्मू– कश्मीर और हिमाचल प्रदेश की तरह देशभर के बाजारों में अपना स्थान बनाने लगा है।

सारूडीह का चाय बगान–ग्राम सारूडीह का चाय बगान पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बन गया है। इस बगान को देखने के लिए पर्यटक पहुँच रहे हैं। मात्र 10 रूपये की फीस में चाय बगान का अद्भुत नजारा उन्हें दार्जिलिंग, ऊँटी और असम में होने का अहसास कराता है। महिला समूह को विगत कुछ महिनों से 50 हजार रूपये से अधिक की आमदानी हो गई है।

धान की खेती तक ही सीमित रहने वाले जशपुर जिले के किसानों का रूझान नकदी फसल की ओर तेजी से रहा है। खासकर बगीचों और मनोरा तहसील के पाठ क्षेत्रों के किसान नए फसल को लेकर खासे उत्साहित हैं। यहाँ के किसानों ने टाउ और आलू के ब्यापक सफलता पाई है। पाट क्षेत्रों में इन दिनों पड़ोसी राज्य झारखण्ड और उड़ीसा के मिर्च ब्यापारियों का होड़ लगा है। जशपुर के सन्ना समेत आसपास के गाँवों में इन दिनों मिर्ची की फसल लहलहा रही है। पहले केवल धान ही किसानों के आय का प्रमुख साधन था। मिर्ची के लिए तापमान और बारिश का संतुलन बेहद आवश्यक है। ज्यादा पानी कम होने से पौधे के गलने का खतरा होता है, वहीं पानी कम होने से पौधों के गलने का खतरा होता है, वहीं पानी के ज्यादा कम होने से पौधे सूख जाते हैं। इसके अलावा कई बीमारियों की अशंका बनी रहती है। कभी गर्मी के सीजन मूसलाधार बारिश होती है। तो कभी बरसात के मौसम में तेज धूप खिली रहती है। समय–समय पर आने वाले चक्रवतीय तूफान और तेज बारिश के साथ ही पहाड़ों से उतरने वाला पानी भी फसल को नुकसान पहुँचाता है। जशपुर जिले में नाशपाती की खेती से समृध्द हो रहे किसान–नाशपाती के वृहद उत्पादन से जिले के मनोरा और बगीचा तहसील को एक नई पहचान मिल रही है। जिले में धान के साथ किसान नाशपाती का उत्पादन सबसे अधिक खेती कश्मीर में की जाती है। जिले के पाट क्षेत्रों की जलवायु नाशपाती के लिए बेहद अनुकुल बताया जा रहा है। छत्तीसगढ़ राज्य अपनी धान की दुर्लभ प्रजातियों के लिए विश्व में प्रसिद्ध है। बड़े पैमाने पर धान की खेती होने के कारण राज्य को धान का कटोरा कहा जाता है। प्राकृतिक संपदा से भरपूर प्रदेश में नदियां, जंगल, पहाड़ और पठार भी काफी भू–भाग में हैं, इनमें पठारी भूमि में धान का उत्पादन नहीं हो पाने के कारण अर्थव्यवस्था में उनका योगदान सीमित हो गया था। जशपुर जिले के पठारी क्षेत्र में चाय और बस्तर में कॉफी की खेती ने संभावानाओं के नए द्वार खोले हैं। कृषि वैज्ञानिकों ने यहां की जलवायु के अध्ययन के आधार पर संभावनाओं को नई दिशा दी है। टी–कॉफी बोर्ड गठन का फैसला इसी दिशा में अहम कदम है। जिसके तहत राज्य में 10–10 हजार एकड़ में चाय और कॉफी की खेती कराने का लक्ष्य तय किया गया है। जशपुर जिले में चाय की खेती सफलतापूर्वक की जा रही है। यहां शासन ने जिला खनिज न्यास, वन विभाग, डेयरी विकास योजना और मनरेगा की योजनाओं के बीच समन्वय स्थापित करते हुए कांटाबेल, बालाछापर, सारुडीह के 80 एकड़ भूमि में चाय बागान विकसित हो रहे हैं।

कुछ साल बाद जब बागानों से चाय का उत्पादन शुरू होगा तो प्रति एकड़ 2 लाख रुपये सालाना तक का किसान लाभ कमा सकेंगे. यह धान की खेती से कहीं अधिक लाभकारी साबित होगा। इसी तरह बस्तर के दरभा, ककालगुर और डिलमिली में कॉफी की खेती विकसित हो चुकी है। यहां कॉफी की दो प्रजातियां अरेबिका और रूबस्टा कॉफी लगाए गए हैं। बस्तर की कॉफी की गुणवत्ता ओड़िशा और आंध्रप्रदेश के अरकू वैली में उत्पादित किए जा रहे कॉफी के समान है।

कॉफी उत्पादन के लिए समुद्र तल से 500 मीटर की उंचाई जरूरी है। बस्तर के कई इलाकों की उंचाई समुद्र तल से 600 मीटर से ज्यादा है जहां ढलान पर खेती के लिए जगह उपलब्ध है। 100 एकड़ जमीन में कॉफी उत्पादन का प्रयोग सफल रहा है। बस्तर कॉफी नाम से इसकी ब्रांडिग भी हो रही है। उद्यानिकी विभाग किसानों को काफी उत्पादन का प्रशिक्षण भी दे रहा है। चाय–कॉफी की खेती की विशेषता यह है कि इसके लिए हर साल बीज नहीं डालना पड़ता। किसान कॉफी की खेती से हर साल 50 हजार से 80 हजार प्रति एकड़ आमदनी कमा सकते हैं। धान की तरह बहुत अधिक पानी की भी आवश्यकता नहीं पड़ती। केवल देखभाल करने की आवश्यकता रहती है। वनोपजों के मामले में प्रदेश काफी आगे है और पठारी क्षेत्रों में चाय–कॉफी के उत्पादन से ग्रामीणों के लिए रोजगार और अर्थोपार्जन के नए अवसर सृजित हो रहे हैं।

जशपुर जिले में चाय उत्पादन की ब्यापक भावी संभावनाएँ– सरकार की ओर से टी–कॉफी बोर्ड बनाने पहल को सही दिशा में उठाया गया कदम माना जा सकता है। उम्मीद की जाती है कि कृषि वैज्ञानिकों के अध्ययन के आधार पर सरकार की तरफ से हुई इस पहल के सार्थक परिणाम सामने आएंगे और राज्य के किसानों और उद्यमियों की संपन्नता में चाय–कॉफी ताजगी लाने का काम करेगी।

जशपुर जिले में पाये जाने वाले मिट्टी
तालिका (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले को टी लैंड बनाने के लिए वन विभाग जुट गया है। अभी जिले में चार शासकीय व एक निजी बागान समेत चाय के बागान कुल 300 एकड़ में है। अब विभाग ने इसे एक हजार एकड़ में विस्तार करने की योजना बनाई है। इसकी कार्य योजना बनकर तैयार है। इसके लिए निजी पूंजी निवेश को प्रोत्साहित करने के साथ ही शासकीय भूमि उपलब्ध कराने की रणनीति बनाई गई है। जिले में चाय बागान की शुरुआत वर्ष 2011 में मनोरा तहसील के ग्राम सोगड़ा से हुई थी। यहां अघोरेश्वर आश्रम में प्रयोग के तौर पर 11 एकड़ में असम से चाय के पौधे लाकर रोपे गए थे। प्रयोग को प्रारंभिक स्तर पर मिली सफलता के बाद वन विभाग के माध्यम से ग्राम पंचायत सारूडीह के ढरूआकोना में 11 किसानों की जमीनं किराए में लेकर 10 एकड़ में चाय के पौधे लगाए गए। इसमें भी सफल रहने के बाद जिले के इस पहले सरकारी चाय बागान को 20 एकड़ तक विस्तारित किया जा चुका है। इसके अलावा बालाछापर, घुटरी, कांटाबेल, झोलंगा में भी चाय बागान तैयार हो चुके हैं। इसके लिए निवेशकों को शासकीय दर पर सरकारी जमीन उपलब्धा कराई जा रही है। वर्तमान में 600 एकड़ जमीन का चिन्हांकन कर लिया गया है। साथ ही जो किसान पारंपरिक फसल छोड़कर चाय बागान से जुड़ना चाहते हैं उन्हें मनरेगा और कृषि से जुड़ी अन्य योजनाओं के माध्यम से सहायता दी जाएगी।

जशपुर जिले के वन परिछेत्र पर्यावरण रोपणी बालाछापर से वर्ष 2022– 2023 में निर्गमित चाय एवं कॉफी के पौधे का विवरण–

क्र.	चाय/कॉफी के पौधे रोपण किये स्थानों के नाम	विकास खण्ड	प्रजाति	पौधे की संख्या
1.	कांटाबेल	मनोरा	चाय	137901
2.	सारूडीह	जशपुर	चाय	26384
3.	अस्ता	जशपुर	चाय	43566
4.	गुटरी	जशपुर	चाय	60598
5.	डठाटोली एवं रजौटी	जशपुर	चाय	77898
6.	झोलंगा	जशपुर	चाय	33824
7.	बलरामपुर	बलरामपुर	चाय	18125
8.	छिछली	बगीचा	चाय	156822
9.	राजपुर	बलरामपुर	चाय	200
10.	सोगड़ा	जशपुर	चाय	672
11.	कांसाबेल	कांसाबेल	चाय	100
12.	ढ़ोढ़ीडाँड़	कुनकुरी	चाय	200
13.	मैनपाट	सरगुजा	चाय	950
14.	हिण्डाल्को	सरगुजा	चाय	16500
15.	लोहरदगा	झारखण्ड	चाय	9273
16.	राँची	झारखण्ड	चाय	200
17.	अन्य	जशपुर	चाय	655
			कुल चाय के पौधे-	**583868 नग**
18	झोलंगा	जशपुर	कॉफी	500
19	ढौठाटोली	जशपुर	कॉफी	6724
20	रानी बगीचा	जशपुर	कॉफी	2910
21	ढ़ोढ़ीडाँड़	कुनकुरी	कॉफी	770
22	कुनकुरी	कुनकुरी	कॉफी	1255
23	सेन्द्रीमुड़ा	बगीचा	कॉफी	4760
24	राजपुर	शकरगढ़	कॉफी	880
25	रायपुर	रायपुर	कॉफी	26
26	जशपुर	जशपुर	कॉफी	150
27	गम्हरिया	जशपुर	कॉफी	120
28	अन्य	जशपुर	कॉफी	583
			कुल कॉफी के पौधे-	**18678 नग**

स्रोत:- कार्यालय वन परिक्षेत्र पर्यावरण रोपणी बालाछापर ,जिला-जशपुर (छ.ग)

निष्कर्ष एवं सुझाव - भारत देश में अब तक हम असम एवं दार्जिलिंग को चाय उत्पादक राज्य के नाम से जानते थे, किन्तु अब छत्तीसगढ़ राज्य के जिला-जशपुर का नया नाम भी जुड़ गया है। उपरोक्त शोध से हमें यह ज्ञात होता है कि जशपुर क्षेत्र में चाय उत्पादन के लिए अनुकूल वातावरण है,यहाँ कि मिट्टी,जलवायु,वर्षा,औसत तापमान सभी चाय खेती के लिए उपयुक्त है। रोपणी बालाछापर में चाय,कॉफी के पौधे तैयार किया जाता है। तत्पश्चात इसे जशपुर के विभिन्न क्षेत्रों में चाय की बगान में पौधे का रोपण किया जाता है,जशपुर के अलावा सरगुजा,बलरामपुर तथा झारखण्ड राज्य में भी यहाँ (जशपुर) से पौधे लिया जा रहा है। छत्तीसगढ़ राज्य के जिला-जशपुर में चाय के साथ-साथ ठण्ड प्रदेशों की बागवानी फसल की अपार संभावनाएँ हैं। सरकार को चाय उत्पादन को प्रोत्साहित करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. सिंह,आई.डी.. सम्पूर्ण चाय उत्पादन और संसाधन, New Delhi Publishers,New Delhi ISBN:978-93-81274-63-7
2. कार्यालय उप संचालक कृषि विकास एवं किसान कल्याण तथा जैव प्रौद्यिगिकी विभाग,जिला-जशपुर (छ.ग.)
3. कार्यालय वन परिक्षेत्र पर्यावरण रोपणी बालाछापर ,जिला-जशपुर (छ.ग.)
4. www.cg.gov.in
5. www.jashpur.gov.in
6. कार्यालय जनसम्पर्क विभाग जिला-जशपुर (छ.ग.)।
7. दैनिक समाचार (पत्रिका,नवभारत,दैनिक भारत,हरिभूमि) पत्र।

जशपुर जिले में पाये जाने वाले मिट्टी:- (हेक्टेयर में)

क्रं.	जिला	विकास खण्ड	भाटा	मटासी	डोरसा	कन्हार	कछार	योग
1.	जशपुर	जशपुर	9992	7498	2891	3117	-	23498
2.		मनोरा	15043	5198	2298	3800	-	26339
3.		दुलदुला	6000	5677	3214	2498	-	17389
4.		कुनकुरी	15000	7491	2081	2907	-	27479
5.		कांसाबेल	5680	9235	5125	5200	-	25240
6.		फरसाबहार	7078	5567	7531	10211	-	30387
7.		बगीचा	15810	20330	8847	8321	-	53308
8.		पत्थलगाँव	9791	11589	16331	15700	-	53411

स्रोत:- कार्यालय उप संचालक कृषि विकास एवं किसान कल्याण तथा जैव प्रौद्यिगिकी विभाग,जिला-जशपुर (छ.ग.)

****